

सिफरी मासिक समाचार

हिंदी हैं हम



नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



भारत की अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र केवल खाद्य उत्पादन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण आजीविका, पोषण सुरक्षा, रोजगार और सामाजिक-आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। अगस्त 2026 में भा.कृ.अनु.परि.-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियां इस व्यापक दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती हैं। इन पहलों में वैज्ञानिक अनुसंधान को किसानों, मछुआरों, शोधकर्ताओं, अधिकारियों और उद्यमियों तक पहुंचाने पर विशेष बल दिया गया है।

सुंदरबन में SBI की CSR पहल के माध्यम से घरेलू तालाबों में वैज्ञानिक तरीकों से जलीय कृषि अपनाने पर मछली उत्पादन और परिवारों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह उदाहरण दर्शाता है कि यदि वैज्ञानिक ज्ञान को स्थानीय परिस्थितियों और सामुदायिक सहभागिता से जोड़ा जाए, तो छोटे संसाधन भी टिकाऊ आजीविका का प्रभावी माध्यम बन सकते हैं।

गंगासागर में स्थानीय स्तर पर मछली बीज उत्पादन का प्रशिक्षण भी आत्मनिर्भर जलीय कृषि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। गुणवत्तापूर्ण बीज की स्थानीय उपलब्धता किसानों की बाहरी निर्भरता और परिवहन संबंधी समस्याओं को कम करने में सहायक हो सकती है। इसी प्रकार, प्रयागराज में अनुसूचित जाति समुदायों तथा ओडिशा में मत्स्य अधिकारियों के लिए आयोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रमों ने वैज्ञानिक तकनीकों को जमीनी स्तर तक पहुंचाने की प्रतिबद्धता को मजबूत किया है।

युवा शोधकर्ताओं के लिए आणविक तकनीकों का प्रशिक्षण भविष्य के अनुसंधान को नई वैज्ञानिक क्षमता प्रदान करेगा। वहीं, पूर्वी भारत की ब्लू इकोनॉमी पर राष्ट्रीय विमर्श और IPR एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संबंधी पहल अनुसंधान को नवाचार तथा बाजार से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

CIFRI ARGCURE® तकनीक के पेटेंट और व्यावसायीकरण की उपलब्धि इस यात्रा का उल्लेखनीय उदाहरण है। यह सिद्ध करता है कि वैज्ञानिक अनुसंधान की वास्तविक सफलता तब है, जब प्रयोगशाला में विकसित ज्ञान समाज की वास्तविक समस्याओं का समाधान बने।

इन सभी प्रयासों का साझा संदेश स्पष्ट है—“विज्ञान तभी सार्थक है, जब उसका लाभ समाज तक पहुंचे।” सिफरी इसी सोच के साथ वैज्ञानिक उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण, नवाचार और सामुदायिक सहभागिता को एकीकृत करते हुए भारत के सतत एवं समावेशी मत्स्य विकास की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

(निदेशक)

विज्ञान आधारित जलीय कृषि से सुंदरबन में बदली ग्रामीण आजीविका

SBI की CSR पहल से मछली उत्पादन में लगभग 190 प्रतिशत वृद्धि



भारतीय स्टेट बैंक (SBI) द्वारा वित्तपोषित कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) पहल के अंतर्गत सिफरी, बैरकपुर द्वारा सुंदरबन क्षेत्र में संचालित परियोजना ने विज्ञान आधारित जलीय कृषि की प्रभावशीलता का उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस पहल के माध्यम से कम उपयोग में आ रहे घरेलू तालाबों को टिकाऊ आजीविका के साधनों में परिवर्तित किया गया है। परियोजना का क्रियान्वयन दक्षिण 24 परगना के बसंती ब्लॉक स्थित उत्तर मोकाम्बेरिया ग्राम पंचायत के हलदरपाड़ा गांव में किया गया।

परियोजना के अंतर्गत वैज्ञानिक तालाब प्रबंधन और उन्नत जलीय कृषि तकनीकों को अपनाने से औसत वार्षिक मछली उत्पादन 428.2 किलोग्राम से बढ़कर 1,240.5 किलोग्राम प्रति एकड़ हो गया, जो लगभग 190 प्रतिशत की वृद्धि है। इसी प्रकार, मछली पालन से होने वाली वार्षिक घरेलू आय ₹13,900 से बढ़कर ₹39,000 हो गई। इससे सहभागी परिवारों की आर्थिक स्थिति और आजीविका की स्थिरता को मजबूती मिली।



इस पहल से केवल आय में ही वृद्धि नहीं हुई, बल्कि परिवारों की पोषण सुरक्षा में भी सुधार हुआ। घरेलू स्तर पर ताजी मछली की उपलब्धता और खपत बढ़ी है तथा पहले कम उपयोग किए जा रहे तालाबों का उत्पादक उपयोग सुनिश्चित हुआ है। सुंदरबन की विशिष्ट पारिस्थितिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण-अनुकूल और जलवायु-सहिष्णु जलीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिया गया है।

परियोजना की उपलब्धियों को प्रशिक्षण-सह-समापन कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत किया गया। इसमें भारतीय स्टेट



बैंक, पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य विभाग, संस्थान के वैज्ञानिकों, लाभार्थी किसानों, महिला प्रतिभागियों तथा अन्य हितधारकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सिफरी के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि यह पहल वैज्ञानिक अनुसंधान को संस्थागत साझेदारी और CSR सहयोग के माध्यम से जमीनी स्तर पर वास्तविक लाभों में परिवर्तित करने की सिफरी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने हलदरपाड़ा मॉडल को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में वैज्ञानिक घरेलू तालाब जलीय कृषि का एक

विस्तार योग्य मॉडल बताया।

उन्होंने कहा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, सिफरी, मत्स्य विभाग और स्थानीय समुदायों की साझेदारी से विज्ञान, सामुदायिक भागीदारी और संस्थागत सहयोग को एक साथ लाकर लचीली मत्स्य-आधारित आजीविका, महिला सशक्तीकरण, टिकाऊ ग्रामीण विकास और ब्लू इकोनॉमी को बढ़ावा दिया जा सकता है।

कार्यक्रम में यह भी सामने आया कि सक्रिय लाभार्थियों में लगभग आधी महिलाएं थीं। यह पहल महिला सशक्तीकरण तथा समावेशी ग्रामीण विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। लाभार्थी किसानों को परियोजना के बाद भी वैज्ञानिक मछली पालन जारी रखने के लिए कास्ट नेट, pH मीटर और चूना जैसे आवश्यक जलीय कृषि इनपुट उपलब्ध कराए गए। हलदरपाड़ा मॉडल इस बात का प्रभावी उदाहरण है कि वैज्ञानिक नवाचार, CSR सहयोग और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से छोटे घरेलू तालाबों को ग्रामीण समृद्धि, पोषण सुरक्षा और जलवायु-लचीली आजीविका के केंद्रों में परिवर्तित किया जा सकता है।



आधुनिक आणविक तकनीकों से सशक्त होंगे युवा शोधकर्ता

ICAR-CIFRI में जलीय संसाधन प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण



मत्स्य अनुसंधान में अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सिफरी, बैरकपुर में “जलीय संसाधन प्रबंधन के लिए आणविक उपकरण” विषय पर तीन दिवसीय गहन व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

देशभर के विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों से छात्रों, संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं ने प्रशिक्षण में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक आणविक जीवविज्ञान तकनीकों में प्रतिभागियों की तकनीकी दक्षता बढ़ाना था।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता में कमी और उभरते

जलीय रोगों की चुनौतियों के बीच साक्ष्य-आधारित मत्स्य प्रबंधन के लिए आणविक तकनीकें तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही हैं।

उन्होंने जीनोमिक्स, DNA बारकोडिंग, पर्यावरणीय DNA (eDNA) और जैव-सूचनाविज्ञान जैसी तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इनका उपयोग जैव विविधता आकलन, आनुवंशिक संसाधन संरक्षण, रोग निगरानी और टिकाऊ जलीय कृषि को मजबूत करने में किया जा रहा है।





निदेशक महोदय ने युवा शोधकर्ताओं से पारंपरिक मत्स्य विज्ञान के साथ आधुनिक आणविक तकनीकों को जोड़कर नवीन और विज्ञान-आधारित समाधान विकसित करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में डॉ. ए. के. बेरा, प्रमुख, एक्वाटिक एनवायरनमेंटल बायोटेक्नोलॉजी प्रभाग ने जीनोमिक्स, प्रोटीओमिक्स और जैव-सूचनाविज्ञान के बढ़ते अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण का समन्वय डॉ. प्रवीण मौर्ये और डॉ. कविता कुमारी ने किया। कुल 12 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण के दौरान DNA एवं प्रोटीन पृथक्करण, जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस, PCR, न्यूक्लिक अम्ल एवं प्रोटीन का अभिलक्षण तथा



अनुक्रम विश्लेषण के लिए प्रारंभिक जैव-सूचनाविज्ञान सहित विभिन्न तकनीकों का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण का प्रमुख आकर्षण “जलीय संसाधन प्रबंधन के लिए आणविक उपकरण” विषयक प्रशिक्षण पुस्तिका का विमोचन रहा। पुस्तिका में सैद्धांतिक अवधारणाओं के साथ व्यावहारिक प्रयोगशाला पद्धतियों को शामिल किया गया है और यह छात्रों, शोधकर्ताओं तथा जलीय संसाधन प्रबंधन से जुड़े पेशेवरों के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री के रूप में कार्य करेगी।

पूर्वी भारत की जलीय कृषि को मिलेगी नई दिशा

विकसित East AgFoodTech Summit में ICAR-CIFRI ने किया उच्चस्तरीय पैनल का नेतृत्व



पूर्वी भारत की जलीय कृषि को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्यमिता से जोड़ने की दिशा में सिफरी, बैरकपुर ने Viksit East AgFoodTech Summit (VEATS 2026) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिस्वा बांग्ला कन्वेंशन सेंटर, कोलकाता में आयोजित सम्मेलन में “Scaling the Blue Economy: The Rise of Eastern Aquaculture” विषय पर उच्चस्तरीय पैनल चर्चा आयोजित की गई। इसका संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने किया।

पैनल में अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय विकास और एग्री-टेक उद्यमिता से जुड़े विशेषज्ञों ने भाग लिया। चर्चा में पूर्वी भारत के विशाल मीठे पानी के संसाधनों, मत्स्य विविधता, जलीय कृषि क्षमता और ग्रामीण मानव संसाधन को ब्लू इकोनॉमी के विकास का आधार बनाने पर विचार-विमर्श किया गया।



डॉ. डे ने कहा कि पूर्वी भारत के जल संसाधन केवल मछली उत्पादन के साधन नहीं हैं, बल्कि इन्हें नवाचार, उद्यमिता, रोजगार सृजन, लचीली आजीविका और टिकाऊ आर्थिक विकास के शक्तिशाली माध्यम में बदला जा सकता है।

पैनल में विज्ञान आधारित नवाचार, जलवायु-अनुकूल उत्पादन, बेहतर मत्स्य प्रजनन



एवं पोषण, डिजिटल तकनीक, अनुसंधान-विस्तार-उद्योग साझेदारी और समावेशी विकास मॉडल जैसे विषयों पर चर्चा हुई।

जलीय कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), मोबाइल सलाहकारी सेवाओं और डेटा एनालिटिक्स के बढ़ते महत्व पर भी विशेष ध्यान दिया गया। इन तकनीकों से उत्पादन, निर्णय लेने की क्षमता और बाजार तक पहुंच में सुधार किया जा सकता है।

महिलाओं और ग्रामीण युवाओं के लिए मछली प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग, डिजिटल मार्केटिंग, ई-कॉमर्स और जलीय कृषि आधारित उद्यमिता में नए अवसर पैदा करने की संभावनाओं पर भी चर्चा हुई।

विशेषज्ञों ने फसलोत्तर प्रबंधन, कोल्ड-चेन, मूल्य संवर्धन, ट्रेसबिलिटी और आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया।



चर्चा का निष्कर्ष था कि पूर्वी भारत की जलीय कृषि का भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान, डिजिटल नवाचार, टिकाऊ व्यावसायिक मॉडल और मजबूत साझेदारी के समन्वय में निहित है। यह दृष्टिकोण किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार के अवसर पैदा करने, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को मजबूत करने और भारत की उभरती ब्लू इकोनॉमी में पूर्वी भारत की भूमिका को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

आधुनिक तकनीकों से सशक्त होंगे अनुसूचित जाति के मछुआरे

प्रयागराज में खुला जल अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम



सिफरी के प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र ने अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) के अंतर्गत कौशाम्बी जिले के हरईपुर में “आधुनिक तकनीकों एवं खुला जल अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी” विषय पर तीन दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसूचित जाति के मछुआरों और किसानों को विज्ञान आधारित मत्स्य तकनीकों से जोड़ना तथा उनकी उत्पादकता, तकनीकी क्षमता और आजीविका के अवसरों में वृद्धि करना था। इस कार्यक्रम में कौशाम्बी जिले के 20 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। कार्यक्रम में आधुनिक मत्स्य उत्पादन तकनीकों, संसाधन प्रबंधन और मत्स्य उद्यमिता पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान हिंदी में प्रशिक्षण पुस्तिकाओं का विमोचन किया गया। इनमें “आधुनिक तकनीकों एवं खुले जल की अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी” विषयक पुस्तिका तथा “पेन फिश कल्चर टेक्नोलॉजी” विषयक लीफलेट शामिल थे।

प्रशिक्षण में व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मीठे पानी की मछलियां, पिंजरों और पैन में मिश्रित मछली पालन तथा सजावटी मछली पालन पर सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम में जल गुणवत्ता प्रबंधन, वैज्ञानिक आहार प्रबंधन और मछली स्वास्थ्य जैसे विषयों को भी शामिल किया गया। प्रतिभागियों को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) सहित केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई। परियोजना निर्माण, व्यवसाय प्रस्ताव तैयार करने, संस्थागत ऋण तथा छोटे पैमाने के मत्स्य उद्यम स्थापित करने के संबंध में भी मार्गदर्शन दिया गया।

संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि वैज्ञानिक ज्ञान और उपयुक्त तकनीकों मत्स्य-आधारित आजीविकाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकती हैं। उन्होंने वंचित समुदायों तक आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक जानकारी की पहुंच बढ़ाने की संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई।

यह कार्यक्रम वैज्ञानिक अनुसंधान और जमीनी स्तर पर उसके उपयोग के बीच की दूरी कम करने तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समुदायों के लिए टिकाऊ आजीविका के अवसर बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।



अनुसंधान से बाजार तक: ICAR-CIFRI ने IPR और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को दिया बढ़ावा

Reshmeen Gold+ तकनीक के लाइसेंसिंग समझौते और NIH के साथ MoU से मजबूत हुई संस्थागत साझेदारी



वैज्ञानिक अनुसंधान को बाजार-उन्मुख तकनीकों में परिवर्तित करने की दिशा में सिफरी, बैरकपुर ने अपने परिसर में “बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण” विषय पर कार्यशाला आयोजित की।

यह कार्यक्रम ICAR-CIFRI के 80वें वर्ष के समारोह के अंतर्गत आयोजित किया गया। कार्यशाला में वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, सरकारी अधिकारियों, उद्यमियों और मत्स्य क्षेत्र से जुड़े हितधारकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में पेटेंट, कॉपीराइट, औद्योगिक डिजाइन, ट्रेडमार्क तथा संस्थागत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की भूमिका पर चर्चा की गई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रयोगशाला में विकसित तकनीकों को किसानों, उद्यमियों, उद्योग और समाज तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने की रणनीति विकसित करना था।

मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार पात्र, कुलपति, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर ने मजबूत IPR संरक्षण और प्रभावी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को वैज्ञानिक नवाचारों को सामाजिक लाभ में बदलने के लिए आवश्यक बताया।

डॉ. प्रवीण मलिक, CEO, Agrinnovate India Ltd. ने कहा कि बौद्धिक संपदा का संरक्षण पहला चरण है; वास्तविक उद्देश्य तकनीकों का प्रभावी व्यावसायीकरण और अंतिम उपयोगकर्ताओं तक उनका हस्तांतरण होना चाहिए।





संस्थानके निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार वैज्ञानिक नवाचारों को सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव वाली तकनीकों में बदलने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उन्होंने अनुसंधान संस्थानों, उद्योग और उद्यमियों के बीच मजबूत संबंध विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कार्यशाला का प्रमुख आकर्षण ICAR-CIFRI एवं CSB-CTRITI द्वारा विकसित Reshmeen Gold+ मछली आहार तकनीक के हस्तांतरण के लिए लाइसेंस समझौते पर हस्ताक्षर रहा।

इसके अलावा ICAR-CIFRI और

राष्ट्रीय होमियोपेथी संस्थान (NIH) के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए। MoU के माध्यम से संस्थागत सहयोग, ज्ञान आदान-प्रदान और संयुक्त अनुसंधान के लिए आधार तैयार किया गया।

इस अवसर पर “80 Years of CIFRI Technologies” नामक स्मारिका का विमोचन किया गया। साथ ही ICAR-CIFRI द्वारा विकसित Wetland Health Card भी जारी किया गया, जो आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्रों के वैज्ञानिक आकलन और निगरानी की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है।

कार्यशाला ने यह संदेश स्पष्ट किया कि अनुसंधान की सफलता केवल वैज्ञानिक प्रकाशनों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसका अंतिम उद्देश्य ऐसी तकनीकों का विकास और हस्तांतरण होना चाहिए जो किसानों, उद्यमियों और समाज के लिए वास्तविक लाभ उत्पन्न करें।



ओडिशा में मछली स्वास्थ्य एवं रोग प्रबंधन की क्षेत्रीय क्षमता मजबूत

20 मत्स्य अधिकारियों को वैज्ञानिक निदान और आधुनिक निगरानी तकनीकों का प्रशिक्षण



ICAR-CIFRI, बैरकपुर ने ओडिशा के अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र में मछली स्वास्थ्य और रोग प्रबंधन को मजबूत करने के उद्देश्य से “जलीय जंतु स्वास्थ्य एवं मत्स्य रोग प्रबंधन” विषय पर पांच दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम 17 से 21 अगस्त 2026 तक आयोजित किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग के 20 सहायक मत्स्य अधिकारियों, जिनमें 11 महिला अधिकारी शामिल थीं, ने भाग लिया। ये प्रतिभागी राज्य के 14 जिलों से आए थे।

कार्यक्रम को क्षेत्रीय अधिकारियों की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया गया था। इसमें वैज्ञानिक निदान, रोग पहचान और तकनीक आधारित रोग निगरानी पर विशेष जोर दिया गया।



प्रशिक्षण में 11 कक्षा सत्र, दो प्रयोगशाला अभ्यास और दो क्षेत्रीय भ्रमण शामिल थे। प्रतिभागियों को सामान्य मछली रोगों की पहचान, रोग लक्षण, माइक्रोस्कोपिक परीक्षण, PCR, qPCR तथा जल गुणवत्ता आकलन का प्रशिक्षण दिया गया।

प्रयोगशाला सत्रों में नमूना संग्रह, रोगजनक की पहचान और डायग्नोस्टिक किट के उपयोग का व्यावहारिक अनुभव दिया गया।



कार्यक्रम में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, मृदा एवं जल गुणवत्ता विश्लेषण, enclosure में रोग प्रबंधन, पेन कल्चर तथा रोग निगरानी में GIS के उपयोग जैसे विषय भी शामिल किए गए।

ईस्ट कोलकाता वेटलैंड्स के क्षेत्रीय भ्रमण से प्रतिभागियों को जटिल आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र में मत्स्य एवं जलीय संसाधन प्रबंधन को समझने का अवसर मिला।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण तालाब निगरानी और रोग निगरानी के लिए ड्रोन तकनीक का प्रदर्शन रहा। इससे प्रतिभागियों को यह समझने का अवसर मिला कि आधुनिक डिजिटल तकनीकें जलीय प्रणालियों के त्वरित आकलन और मछली स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों की निगरानी में किस प्रकार उपयोगी हो सकती हैं।

संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि क्षेत्रीय स्तर के मत्स्य अधिकारियों की व्यावहारिक क्षमता को मजबूत करना किसानों तक तकनीकी सेवाओं की प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने मछली स्वास्थ्य प्रबंधन में विज्ञान-आधारित, निवारक और तकनीक-सक्षम दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

प्रशिक्षण के प्रति प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया भी अत्यंत सकारात्मक रही। 90 प्रतिशत प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को अत्यधिक प्रभावी और अपने कार्यक्षेत्र के लिए प्रासंगिक बताया।

यह कार्यक्रम ऐसे तकनीकी रूप से सक्षम मत्स्य अधिकारियों का नेटवर्क विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जो रोगों की प्रारंभिक पहचान, वैज्ञानिक निदान और प्रभावी रोग प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।



स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

संस्थान ने देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना के साथ 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाया।



कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के जलाशय एवं आद्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष, डॉ. रंजन कुमार मन्ना द्वारा ध्वजारोहण समारोह से हुआ। राष्ट्रगान की धुन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया, जिसके बाद गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। सभी कर्मचारी एकजुट होकर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अपने संबोधन में, डॉ. मन्ना ने अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान, सतत जलीय संसाधन प्रबंधन और भारत के मछुआरा समुदायों को समर्थन देने में आईसीएआर-सीआईएफआर के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी से 2047 तक विकसित भारत के मूल्यों को बनाए रखने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का समापन कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और मिष्ठान वितरण के साथ हुआ। समारोह में स्वतंत्रता, विज्ञान के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पण और मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के प्रति प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला गया।

गंगासागर में स्थानीय मछली बीज उत्पादन को बढ़ावा

अनुसूचित जाति के किसानों को वैज्ञानिक मछली पालन और बीज उत्पादन का व्यावहारिक प्रशिक्षण



गंगासागर और आसपास के क्षेत्रों में मछली किसानों की आत्मनिर्भरता बढ़ाने के उद्देश्य से ICAR-CIFRI, बैरकपुर ने “मछली बीज उत्पादन एवं वैज्ञानिक तालाब मछली पालन” विषय पर तीन दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

दिनांक 18-20 अगस्त 2026 तक अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) के अंतर्गत आयोजित इस प्रशिक्षण में 25 मछली किसानों ने भाग लिया।

सुंदरबन क्षेत्र में स्थित गंगासागर की भौगोलिक स्थिति और जल परिवहन पर निर्भरता के कारण गुणवत्तापूर्ण मछली बीज की समय पर उपलब्धता एक महत्वपूर्ण चुनौती है। किसान प्रायः



कोलकाता और पश्चिम बंगाल के अन्य क्षेत्रों से बीज मंगाते हैं, जिससे लंबी दूरी के परिवहन के दौरान बीज में तनाव और मृत्यु की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

ICAR-CIFRI ने स्थानीय स्तर पर मछली बीज उत्पादन की तकनीकी क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से यह प्रशिक्षण आयोजित किया। प्रशिक्षण में तालाब की तैयारी और प्रबंधन, गुणवत्तापूर्ण बीज चयन, संग्रहण घनत्व, आहार एवं आहार प्रबंधन, जल गुणवत्ता प्रबंधन और मछली स्वास्थ्य निगरानी का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण का प्रमुख आकर्षण मछली बीज उत्पादन और कृत्रिम प्रजनन का व्यावहारिक प्रदर्शन था। इसमें brood fish का चयन, circular hatchery के संचालन, प्रेरक एजेंट के उपयोग, हार्मोनल इंजेक्शन, कृत्रिमप्रजनन तथा भारतीय प्रमुख कार्प (IMC) के बीज उत्पादन की तकनीकें शामिल थीं।

संतान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि स्थानीय मछली बीज उत्पादन को केवल एक तकनीकी हस्तक्षेप के रूप में नहीं, बल्कि आजीविका के लचीलेपन और आत्मनिर्भर जलीय कृषि को मजबूत करने वाली महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जाना चाहिए।

उन्होंने विशेष रूप से द्वीपीय और दूरदराज के क्षेत्रों में विकेंद्रीकृत बीज उत्पादन प्रणालियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। स्थानीय स्तर पर बीज उत्पादन से बाहरी स्रोतों पर निर्भरता कम होने, परिवहन के दौरान होने वाली बीज मृत्यु घटने तथा गुणवत्तापूर्ण बीज की समय पर उपलब्धता बढ़ने की उम्मीद है। दीर्घकाल में यह पहल मछली उत्पादकता बढ़ाने, वैज्ञानिक जलीय कृषि को प्रोत्साहित करने और सुंदरबन के अनुसूचित जाति समुदायों के लिए बेहतर आजीविका अवसर विकसित करने में सहायक हो सकती है।



ICAR-CIFRI को CIFRI ARGCURE® तकनीक के लिए भारतीय पेटेंट

वैज्ञानिक अनुसंधान से व्यावसायिक उत्पाद तक पहुंची अभिनव नैनोइमल्सीफायबल फॉर्मुलेशन तकनीक

मत्स्य अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए सिफरी, बैरकपुर को 27 अगस्त 2026 को भारतीय पेटेंट संख्या 600617 प्रदान किया गया।

यह पेटेंट “A Process for Nanoemulsifiable Concentrate Formulations of Hydrophobic Bioactive Molecules” नामक आविष्कार के लिए प्रदान किया गया है।



यह पेटेंट तकनीक hydrophobic bioactive molecules के formulation के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है और इसे CIFRI ARGCURE® नामक नवीन उत्पाद के रूप में सफलतापूर्वक विकसित किया गया है।

CIFRI ARGCURE® का उपयोग Argulus तथा अन्य मछली ectoparasites के प्रबंधन के लिए विकसित किया गया है, जो मछली स्वास्थ्य और जलीय कृषि उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण चुनौती हैं।

वैज्ञानिक नवाचार से व्यावसायिक उपयोग तक

पेटेंट संख्या 600617 मत्स्य नवाचार, प्रौद्योगिकी संरक्षण और व्यावसायीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस उपलब्धि की विशेषता यह है कि तकनीक ने अनुसंधान से व्यावसायीकरण तक की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की है।

CIFRI ARGCURE® का Agrinnovate India Ltd. के माध्यम से गैर-अनन्य (Non-Exclusive) आधार पर दो बार व्यावसायीकरण किया जा चुका है।

अब पेटेंट प्रदान किए जाने से इस तकनीक को मजबूत बौद्धिक संपदा संरक्षण प्राप्त हुआ है और ICAR-CIFRI के बौद्धिक संपदा पोर्टफोलियो को भी मजबूती मिली है।

यह उपलब्धि यह प्रदर्शित करती है कि ICAR-CIFRI वैज्ञानिक अनुसंधान को मत्स्य और जलीय कृषि क्षेत्र के लिए व्यावहारिक, संरक्षित और व्यावसायिक रूप से उपयोगी तकनीकों में परिवर्तित करने में सक्षम है।

प्रभाव की दिशा में अनुसंधान

इस उपलब्धि पर विचार व्यक्त करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि पेटेंट केवल वैज्ञानिक प्रतिभा की मान्यता नहीं है, बल्कि यह इस बात का महत्वपूर्ण उदाहरण है कि अनुसंधान को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के समाधान में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि पेटेंट संख्या 600617 संस्थान के लिए गर्व का क्षण है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अनुसंधान को प्रयोगशाला से बाहर ले जाने की संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि CIFRI ARGCURE® का सफल व्यावसायीकरण यह प्रदर्शित करता है कि जब वैज्ञानिक नवाचार को मत्स्य क्षेत्र की वास्तविक आवश्यकताओं के साथ जोड़ा जाता है, तो उससे महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और व्यावसायिक क्षमता वाली तकनीकें विकसित की जा सकती हैं।

डॉ. डे ने कहा कि संस्थान ऐसे अनुसंधान को लगातार प्रोत्साहित करेगा जो बौद्धिक संपदा उत्पन्न करे, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाए और अंततः मत्स्य एवं जलीय कृषि प्रणालियों की उत्पादकता, स्थिरता और लाभप्रदता में योगदान दे।

उन्होंने टीम को बधाई देते हुए अनुसंधान संस्थानों, उद्योग और अंतिम उपयोगकर्ताओं के बीच मजबूत संबंध विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि स्वदेशी तकनीकों को तेजी से अपनाया जा सके और वैज्ञानिक नवाचारों को मत्स्य क्षेत्र के लिए वास्तविक लाभों में परिवर्तित किया जा सके।

टिकाऊ मत्स्य एवं जलीय कृषि को मजबूत करना

CIFRI ARGCURE® का विकास और व्यावसायीकरण वैज्ञानिक अनुसंधान और क्षेत्रीय अनुप्रयोग के बीच की दूरी कम करने के ICAR-CIFRI के प्रयासों का उदाहरण है।

यह नवाचार उन्नत formulation technology को मत्स्य स्वास्थ्य की व्यावहारिक आवश्यकता के साथ जोड़ता है, जिससे ectoparasite management के लिए अनुसंधान-आधारित समाधान को व्यापक रूप से अपनाने का अवसर मिलता है।

CIFRI ARGCURE® का Agrinnovate India Ltd. के माध्यम से गैर-अनन्य आधार पर दो बार व्यावसायीकरण किया जा चुका है।

यह पेटेंट उपलब्धि उन सभी आविष्कारकों, वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों और टीम के सदस्यों के समर्पित प्रयासों का प्रमाण है, जो इस तकनीक की अवधारणा, विकास, सत्यापन और व्यावसायीकरण से जुड़े रहे।

यह उपलब्धि ICAR-CIFRI की वैज्ञानिक उत्कृष्टता, बौद्धिक संपदा निर्माण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और व्यावसायीकरण के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करती है तथा टिकाऊ, उत्पादक और लचीले मत्स्य एवं जलीय कृषि क्षेत्र के विकास के व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्य में योगदान देती है।

पेटेंट संख्या 600617 के साथ ICAR-CIFRI ने एक बार फिर प्रदर्शित किया है कि भारतीय मत्स्य अनुसंधान वैज्ञानिक खोज से बौद्धिक संपदा, बौद्धिक संपदा से व्यावसायीकरण और व्यावसायीकरण से क्षेत्रीय प्रभाव तक की यात्रा सफलतापूर्वक कर सकता है।

प्रकाशनमंडल

प्रकाशक: प्रदीप डे, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,

(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: director.cifri@icar.org.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in